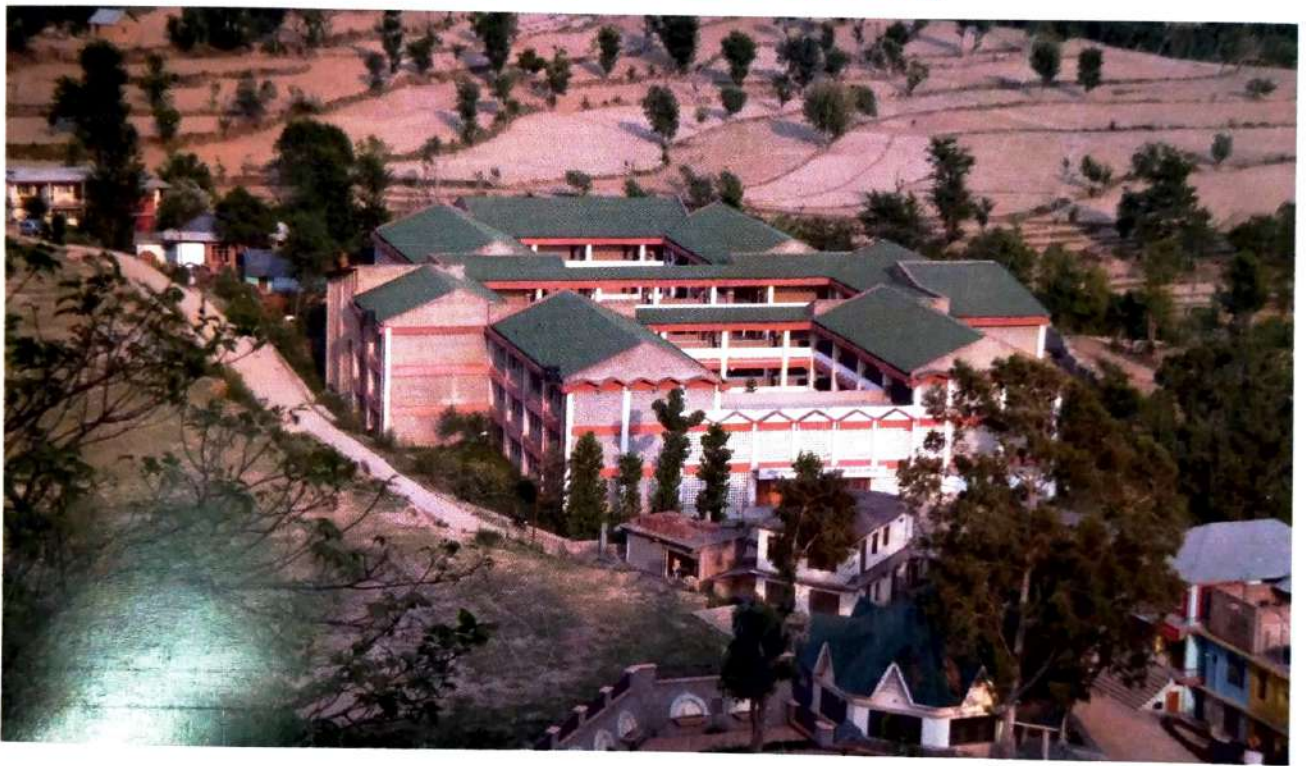




SILVER JUBILEE CELEBRATION

SOUVENIR



GOVERNMENT COLLEGE KARSOG

DISTRICT MANDI (HP)-175011

NAAC ACCREDITED GRADE 'B'

Contact No. : 01907-222116

Website : www.gckarsog.edu.in

e-mail: gckarsog-hp@nic.in

SILVER JUBILEE CELEBRATION

2019-20

ROLL OF PRINCIPALS



SH. BALBIR SINGH
01.01.1999-31.07.1999



DR. D.N. KAPOOR
25.06.1994-31.03.1998



DR. S.N. TYAGI
16.08.1999-31.07.2001



SH. H.K. BHARDWAJ
07.12.2001-31.01.2004



SH. P.S. THAKUR
14.06.2004-02.10.2007



DR. SAROJ CHAUHAN
10.07.2008-01.11.2011



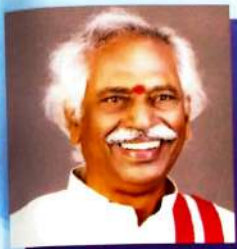
MS. KIRAN LOHIA
17.05.2012-13.06.2014



DR. KAMAL KANT
23.06.2014-31.01.2018



DR. DEEPA SHARMA
15.05.2018-TO TILL DATE



बंडारू दत्तात्रेय

राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय करसोग में रजत जयंती के अवसर को अविस्मरणीय बनाने के उपलक्ष्य पर एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है।

किसी भी संस्थान के लिए प्रारंभिक 25 वर्षों की यात्रा चुनौतीपूर्ण होती है, जिसको करसोग महाविद्यालय ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद की गतिविधियों के माध्यम से संपूर्ण उत्साह एवं कठिन परिश्रम से पूरा किया है।

इस संस्था के उज्वल भविष्य के लिए महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देता हूँ।

(बंडारू दत्तात्रेय)



JAI RAM THAKUR
Chief Minister
Himachal Pradesh
Shimla - 171 002

Message

I am happy to know that Government College, Karsog, district Mandi is celebrating its Silver Jubilee and a souvenir is also being brought out to make the occasion.

I congratulate the college management, faculty and students on this auspicious occasion. Education is one of the most pious professions which deals with the enlightenment of human beings.

It is a matter of pride that Government College Karsog has excelled in educational and other co-curricular activities and it has given many distinguished personalities who are serving the country in different fields.

I hope the souvenir will highlight the academic and other achievements of the College.

I wish the Silver Jubilee celebration a grand success.

(Jai Ram Thakur)



SURESH BHARDWAJ
Education, Law and
Parliamentary Affairs Minister
Himachal Pradesh
Shimla - 171 002

Message

It is a matter of great happiness that Government College, Karsog, District Mandi has completed its 25 years. College administration is celebrating Silver Jubilee and a souvenir is also being published on the occasion.

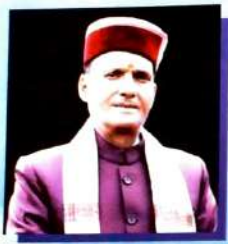
Exceptional prominence has been given on providing the qualitative education in the State. The relationship of teacher and student is eternal and essential for the development of student as well as teacher.

I congratulate the college administration and students on the Silver Jubilee and for bringing out the souvenir. I am confident that this prestigious institution will always motivate students to achieve success in academics, sports and extra co-curricular activities.

I am hopeful that amalgam of Teachers and students from the college would participate to make souvenir memorable by including education and informative articles.

I extend my heartiest wishes for the Silver Jubilee celebration publication of the souvenir.

(Suresh Bhardwaj)



रामस्वरूप शर्मा
संसद सदस्य
(लोक सभा)

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय करसोग में रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर महाविद्यालय अपने 25 वर्षों की यात्रा को स्मारिका के माध्यम से व्यक्त कर रहा है।

किसी भी संस्था के लिए प्रारंभिक 25 वर्षों की यात्रा चुनौतीपूर्ण होती है जिसको करसोग महाविद्यालय ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद की गतिविधियों के माध्यम से संपूर्ण उत्साह एवं कठिन परिश्रम से पूरा किया है। इस संस्था के उज्ज्वल भविष्य के लिए महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देता हूं।

(रामस्वरूप शर्मा)



KAMLESH KUMAR PANT
I.A.S.
PR. SECRETARY (Education)

Message

I am happy to know that Government College Karsog, Mandi is celebrating Silver Jubilee .

At the very outset, I congratulate the college on completing 25 years of excellent work done in imparting education. I hope that the Silver Jubilee Commemorative magazine being brought out on this occasion shall carry valuable information about the progress and achievements of the institution.

I convey my good wishes for the success of the Silver Jubilee celebrations.

(Kamlesh Kumar Pant)



PROF. SIKANDER KUMAR
Vice-Chancellor

Message

It gives me immense pleasure to learn that Govt. College Karsog, Distt. Mandi, Himachal Pradesh is bringing out a Souvenir to mark the Silver jubilee of this renowned institution. This Souvenir would be of great value as it proposes to showcase the glorious history of this one of the esteemed College of the State. The Souvenir will prove to be a platform for students, faculty and the administration to highlight various events held during the journey of last 25 years of the college.

It is indeed heartening to know that this college has contributed significantly to the education hub of the state. This college has achieved many mile-stones and catered to the need of society by educating Eminent Professionals, Administrators, Engineers and Doctors.

I wish the Silver Jubilee celebrations of the college a great success. I sincerely hope that this will continue to strive for the academic excellence.

(Sikander Kumar)



हीरा लाल
सदस्य विद्यान सभा 26-करसोग

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय करसोग में रजत जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर महाविद्यालय अपने 25 वर्षों की यात्रा को स्मारिका के माध्यम से व्यवस्त कर रहा है।

किसी भी संस्था के लिए प्रारंभिक 25 वर्षों की यात्रा चुनौतीपूर्ण होती है जिसको करसोग महाविद्यालय ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद की गतिविधियों के माध्यम से संपूर्ण उत्साह एवं कठिन परिश्रम से पूरा किया है।

इस संस्था के उज्ज्वल भविष्य के लिए महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देता हूं।

(हीरा लाल)



DR. AMARJEET K. SHARMA
Director

Message

It gives me immense pleasure to know that Government College Karsog Distt. Mandi Himachal Pradesh, has complete 25 glorious years and is going to celebrate this year as "Silver Jubilee". It is a matter of great pride that in order to highlight the achievements of twenty five years, the College is going to publish the "Souvenir".

I hope the Souvenir would not only provide an appropriate platform to the students to exhibit their creative talents and literary skills, but also highlight the activities of College.

I wish the Principal, Teachers and students of the College all success in their endeavors and best wishes for successful publication of the Souvenir.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)



डॉ. दीपा शर्मा
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय करसोग

संदेश

आज महाविद्यालय की रजत जयंती के उपलक्ष्य में यह मेरे लिए अत्यधिक गौरव का विषय है कि मैंने सन् 1999 से 2000 तक राजकीय महाविद्यालय करसोग में एक प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। तत्पश्चात् पूरे 18 वर्षों के पश्चात् 2018 में एक प्राचार्य के रूप में पदभार संभाला और आज रजत जयंती समारोह की साक्षी बनी हूँ। सन् 2000 में महाविद्यालय का एक भाग ही तैयार हो पाया था जिसमें 1 कमरा में ही पढ़ाई और कार्यालय की संपूर्ण व्यवस्था की गई थी। उस समय विद्यार्थियों की संख्या 450 थी और यह कहा जाता था कि दूरदराज क्षेत्र में होने के कारण यह संख्या 700 से अधिक कभी भी नहीं होगी। परंतु आज मैं नव के साय कह सकती हूँ कि विद्यार्थियों की संख्या बढ़कर लगभग 2,000 हो गयी है और महाविद्यालय का निर्माण कार्य भी सौंदर्य के साय संपूर्ण हो गया है। सबसे अधिक गौरव का विषय यह है कि इसी महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके कई विद्यार्थी आज प्राध्यापक के रूप में इसी महाविद्यालय में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं और कुछ विद्यार्थी अलग-अलग क्षेत्रों में उच्च ओहदों पर कार्यरत हैं।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों को संपूर्ण अत्याधुनिक सुविधाएं प्राप्त हैं जिनमें तीन स्मार्ट क्लबहाउस, एक कॉन्फ्रेंस हॉल, एक भाषाविज्ञान प्रयोगशाला तथा दो कंप्यूटर प्रयोगशालाएं उपलब्ध करवाई गयी हैं। तीन विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं का भी प्रावधान है। इसके अतिरिक्त अन्वय तीन विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारम्भ करने के लिए प्रस्ताव भेज दिया गया है। विद्यार्थियों के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त पुस्तकालय की व्यवस्था भी की गयी है। नित्य विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए नए शैक्षणिक भवन का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है जिसके कारण अधिकाधिक विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। इन चुनौतियों 25 वर्षों की यात्रा में यह महाविद्यालय निरंतर विकास के पथ पर तीव्रता से अग्रसर है। सन् 2018 में महाविद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा दूसरी बार निरीक्षण और मूल्यांकन किया गया है जिसमें दूरदराज का क्षेत्र होने पर भी इसे 'बी' ग्रेड से बजाया गया है। इस विशिष्ट सम्मान के लिए महाविद्यालय के संपूर्ण कर्मचारी और प्राध्यापक गण बधाई के पात्र हैं जिनकी संपूर्ण निष्ठा लग्न व अथक प्रयासों के कारण महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ईश्वर से मेरी यही कामना है कि भविष्य में भी यह महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों, कर्मचारियों और प्राध्यापकों के कारण उच्च प्रतिष्ठा को हासिल करे और नित्य नई उपलब्धियां प्राप्त कर पाने में समर्थ हो सके।

डॉ. दीपा शर्मा
प्राचार्य

राजकीय महाविद्यालय करसोग

25 Years - A Spectrum
NCC, NSS and R & R



राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के उद्घाटन पर मुला अतीथि का स्वागत करते हुए प्राचार्य डा. एस . एन. एस. त्वागी











राजकीय महाविद्यालय | करसोम जिला मण्डी
175001



राजकीय महाविद्यालय | करसोम जिला मण्डी
175001



ने "राष्ट्रपति रोवर एंड रेंजर्स कैंप" में भाग लिया है! फरवरी 2019 में महाविद्यालय के तीन रोवर ने राष्ट्रीय कुंभ मेला शिविर में सेवा देकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है। इन इकाइयों के साथ-साथ महाविद्यालय में इको क्लब, रेड रिबन क्लब, जे. सी. बोस सोसायटी, साहित्यिक समिति, वाणिज्य समिति, महिला प्रकोष्ठ आदि समितियां निरंतर प्रवाहमान हैं!

महाविद्यालय में नाट्य कला मंच इकाई भी महत्वपूर्ण कार्य कर रही है, जहां पर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अपने नवीन प्रतिभा को भी दिखा रहे हैं! इस कला मंच के विद्यार्थी अपनी अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन करके महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

इसके साथ-साथ महाविद्यालय ने सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राईव छात्रों को प्रेरित किया है। संगीत के क्षेत्र में भी छात्रों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। क्षेत्रीय संस्कृति और परंपरा के संरक्षण का प्रयास भी सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से किया जा रहा है।

महाविद्यालय करसोग जिस समय से अस्तित्व में आया, उस समय से ही यहां पर उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अनुभवी शिक्षक नियुक्त रहे हैं। सभी शिक्षक विद्यार्थियों में नई प्रतिभा और कौशल लिखारने में कर्मरत है। शिक्षकों का लगातार यही प्रयास रहा है कि विद्यार्थियों में ज्ञान अर्जित करने की क्षमता में बढ़ोतरी होती रहे। महाविद्यालय के गैर शिक्षक कर्मचारी भी इसकी उन्नति के लिए लगातार कर्मनिष्ठ रहे हैं। अपनी इतने साल की अवधि में महाविद्यालय ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में लगातार अच्छे परिणाम दिए हैं!

भविष्य में इस महाविद्यालय की प्रगति की अपार संभावनाएं दिखाई दे रही हैं, आने वाले समय में महाविद्यालय में एम. ए. के विभिन्न विषयों की कक्षाएं भी शुरू की जाएंगी। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय पूरा प्रयास कर रहा है कि यहां पर जल्द से जल्द व्यवसायिक कोर्स की शुरुआत की जाए। यह महाविद्यालय हमेशा प्रयत्नशील रहेगा, विद्यार्थियों के अकादमिक विकास के साथ-साथ आदर्श चरित्र- निर्माण में सहायक बने, ताकि प्रदेश को ही नहीं अपितु देश को बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तिव मिल सके।

शिक्षा का महत्व

जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है तभी से पृथ्वी पर शिक्षा का प्रारंभ हुआ है। शिक्षा को मानव ने एक आभूषण के समान धारण किया जो मानव को पशु जगत से अलग करती है। शिक्षा एक व्यक्ति के लिए आंतरिक और बाह्य शक्ति प्रदान करने का सबसे महत्वपूर्ण मंत्र है। शिक्षा जहां मनुष्य का मौलिक अधिकार है वहीं किसी भी इच्छित बदलाव और मनुष्य के मरिदाक व समाज के उत्थान के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के महत्व को संस्कृत के महान विद्वान् भर्तृहरि के द्वारा निम्नलिखित श्लोक के माध्यम से सुंदरता से व्यक्त किया गया है-



न चौरहार्थं न च राजहार्थम्
न भार्ताभूयं न च भार्यकारि ।
व्यये कृते वर्धते एव त्रियम्
विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम् ॥

अर्थात् शिक्षा रूपी धन सभी अन्य धनों की अपेक्षा उत्तम धन है जिसे न तो गोर बुरा सकता है। न ही किसी राजा अथवा उच्च अधिकारी द्वारा इसे छीना जा सकता है, न ही यह भाइयों में बंटवारे का कारण बनता है और सबसे बड़ी इसकी विशेषता यह है कि जितना अधिक इसे खर्च किया जाता है वह संपत्ति उतनी ही अधिक बढ़ती रहती है। इसीलिए ज्ञान वह संचित निधि है जिसका लाभ हमें जीवन भर प्राप्त होगा है शिक्षा वह माध्यम है जो हमारी शंकाओं और भय को दूर करने में हमारी सहायता करती है। हमें जीवन के संघर्षों से उभारती है। शिक्षा का महत्व केवल आजीविका प्राप्त करने मात्र तक ही सीमित नहीं है, अपितु इसके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इसके द्वारा मनुष्य में उन सभी गुणों का विकास होता है जो मानव में मानवता का संचार कर पाने में सहायक होते हैं।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब भी समाज में परिवर्तन हुए तब तब शक्ति के सम्मक्ष बुद्धि ने विजय प्राप्त की। चाहे वह महाभारत का युद्ध हो या रामायण कालीन युद्ध हो या फिर कोई अन्य। आचार्य चाणक्य ने भी बुद्धि के बल पर मगध देश की अपार सेना को हराकर चंद्रगुप्त को मगध देश का राजा बनाया था। संसार में यह याद नहीं रहना जाता कि कब कितने हथियार बने और कितने प्रयोग किए गए अपितु यह याद रहना जाता है कि राष्ट्रमान किसने लिखा? राष्ट्र गीत की रचना किसने की? शूल्य की खोज किसने की? गीता का ज्ञान किसने दिया? रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के रचयिता कौन थे? संस्कृत में एक सूक्ति है "स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" राजा अथवा उच्च पद पर प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने सीमित स्थान पर ही सम्मान प्राप्त करता है परंतु ज्ञान से युक्त मनुष्य सर्वत्र सम्मान ग्रहण करता है क्योंकि उसके ज्ञान की कीर्ति उसके उस स्थान पर पहुंचने से पहले ही वहां पर पहुंच जाती है। इसीलिए विलियम शेक्सपियर, ली. वी. रमन, अल्बर्ट आइंस्टीन, कालिदास, सूरदास, तुलसीदास, कबीर दास, रहीम दास, रविंद्र नाथ टैगोर आदि विद्वान् संपूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत हैं तथा संपूर्ण विश्व में जाने जाते हैं।

शिक्षा के द्वारा सर्वांगीण विकास के महत्व को प्रदर्शित करने वाला निम्नलिखित श्लोक बहुत से स्थानों पर उद्धृत किया जाता है-

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनद् धर्मं ततः सुखम् ॥

अर्थात् शिक्षित होने पर हमें विनम्रता प्राप्त होती है। विनम्रता के द्वारा हमारे अंदर किसी भी कार्य को करने की योग्यता आती है और योग्यता प्राप्त करके मनुष्य जीविकोपार्जन के लिए किसी भी कार्य को करने की निपुणता हासिल कर लेता है। तत्पश्चात् सामाजिक एवं धार्मिक उन्नति में मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करके आनंद को प्राप्त करता है।

अतः मनुष्य के संपूर्ण उत्थान के लिए शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। हमें शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए और अपने आसपास के वातावरण से, बड़ों के अनुभवों से, महापुरुषों की रचनाओं से, प्रकृति और पर्यावरण से सभी से कुछ न कुछ प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए और जीवन पथ पर सदैव बुद्धिमत्ता लाना और परिश्रम के साथ अग्रसर रहना चाहिए।

डॉ० दीपा शर्मा, प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय करसोग

मेरी स्मृतियों में मेरा पहला महाविद्यालय

कुछ स्थान एवं लोग ऐसे हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। 4 सितंबर 2008 को मैंने प्रकृति की गोद में कदम रखा तो बिल्कुल भी ऐसा एहसास नहीं हुआ कि मैं किसी अपरिचित स्थान पर पहुंचा हूँ। समय बीता गया, प्यार बढ़ता गया हर वर्ष आने की सोचता किंतु छत्र-छत्राओं के साथ ऐसा प्रेम बढ़ जाता कि इस बैच को पढ़ाने के बाद चला जाऊंगा, यही फ्रम 5 वर्षों तक जारी रहा। करसोग घाटी की माहूलांग, चुरांग, चिंडी, कुब्ज की पर्वत श्रृंखला रक्षा करती है।



ममेल, कामाख्या के मंदिरों की पवित्र घटियां, मधुर संगीत, लहरियां बिखेरते हैं। वातावरण सदैव पवित्रता को सजाए हुए रहता है। पूरी घाटी के जनमानस में अपनापन झलकता है, यद्यपि इस घाटी में कुछ सामाजिक रुढ़ियां भी व्याप्त हैं जिनमें समय के साथ साथ परिवर्तन आता हुआ प्रतीत होता है। दिवंगत डॉ० सतीश शर्मा की अनुवायं में जब सार्य काल के समय महाविद्यालय के शिक्षकों का कार्या ममेल होते हुए आदरणीय मतीधर जी के होटल में रुकता विषय संबंधी चर्चाएं होतीं. सार्यकाल बिछुड़कर प्रातः मिलन के आशवासन होते इस दौर में आत्मीयता सदैव सभी के सहयोग एवं प्यार से 5 वर्ष कब बीत गए, पता ही नहीं चला। कभी अज्ञेय की भांति मैंने भी वादा किया था -

दिया मन को दिलासा पुनः आऊंगा।

(भले ही बरस दिन अनजानि युगों के बाद)

क्षितिज ने पलक -सी खोली,

तमक कर दामिनी ब्रेली,

अरे याचावर रहेगा चार ?

क्षितिज को आवाज लगाने का मौका नहीं दूंगा। जब भी समय अवसर देगा मैं इस करसोग घाटी में अवश्य आऊंगा।

डॉ० राजन तनवर

राजकीय महाविद्यालय सोलन

मेरी स्मृतियों में करसोग महाविद्यालय

प्रकृति के मनोहारी दृश्य देवी देवताओं की पावन धरा करसोग में मैंने जब कदम रखा तो यह मेरे लिए अदभुत क्षण था। यहीं से मेरे जीवन की नई शुरुआत हुई जिहां मैंने शिक्षिका के रूप में सेवाएं देकर कुछ नए



रस्ते तलाश किए। यहां के छात्रों का महाविद्यालय में प्रवेश करते समय पूजा स्वल समझकर प्रवेश द्वार को नतमस्तक होकर स्पर्श करना मेरे मस्तिष्क में हमेशा एक सुखद स्मृति बनी हुई है। छात्रों का गुरुओं के प्रति सम्मान भाव इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्वयं नैतिक मूल्यों का परिचायक है। क्षेत्र के देवी देवताओं का सकारात्मक प्रभाव यहां के छात्रों के लिए ही नहीं समस्त क्षेत्रवासियों के लिए वर्दान बन है। मुझे इस महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों से स्नेह एवम सम्मान मिला और अपने सहकर्मियों के साथ मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। दिनभर महाविद्यालय में विद्यार्थियों के साथ और सहकर्मियों के साथ समय यूं बीता कि घर से दूर रहने के बावजूद भी अपनापन महसूस हुआ। मेरी कामना है कि मुझे सेवा का पहला सुअवसर प्रदान करने वाला यह शिक्षालय निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर रहे।

डॉ० कामिनी शांडिल
फाइन आर्ट्स कॉलेज कोटरोश

राजकीय महाविद्यालय करसोग : रजत जयंती

हिमाचल प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों में करसोग घाटी मंडी जनघर का खूबसूरत दर्शनीय स्थल है। मंडी मुख्यालय से 120 किलोमीटर, राजधानी शिमला से 106 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां के छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त के लिए मंडी, शिमला, रामपुर जाना पड़ता था। जो जनसाधारण की पहुंच से दूर था। हिमाचल प्रदेश सरकार प्रयासों से वर्ष 1994 में सात नए महाविद्यालय स्थापित किये गए। जिसमें राजकीय महाविद्यालय करसोग भी शामिल था। इस वर्ष 2019 में महाविद्यालय जयंती समारोह मना रहा है। मैं इस शुभ अवसर पर संपूर्ण महाविद्यालय परिवार, छात्रों, अध्यापकों तथा करसोग वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई देना चाहता हूँ, कि मैं इस महाविद्यालय के प्रथम परिवार (फर्स्ट बैच) का हिस्सा रहा हूँ। मैंने इस संस्थान को गर्वित एवं पल्लित्व होते हुए देखा है। मैंने करीब 16 वर्ष इस महाविद्यालय में प्राध्यापक राजनीति शास्त्र के रूप में सेवाएं प्रदान कीं। नवंबर 14, 1994 से नवंबर 1995 तक निविदा के आधार पर और 1998 से 2013 तक नियमित आधार पर कार्य किया। मैंने इस महाविद्यालय को उतार-चढ़ाव से आगे बढ़ते हुए देखा है। शिथु अवस्था से युवावस्था की ओर बढ़ने में अनेक प्राचार्यों, प्राध्यापकों, छात्रों, पी. टी. ए., छात्र संघ, सरकार, स्थानीय जनता का महत्वपूर्ण



योगदान रहा है। महाविद्यालय में सेवा करने का प्रथम वर्ष 1994-95 मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण एवं यादगार हिस्सा था। मैंने अनेकों पुराने अनुभवी प्राध्यापकों के साथ काम किया। उनकी कल्प्य निष्ठा तथा विद्यार्थियों के प्रति समर्पण मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहेगी। मुझे महाविद्यालय प्रबंधन के संबंधित अनेक कार्यों को करने का अवसर प्राप्त हुआ। करसोग क्षेत्र के स्थानीय निवासी कर्नल हरी शरण के प्रयासों से वर्ष 2001 से इस महाविद्यालय में एनसीसी का पहला द्रष्ट 25 लड़कों के साथ प्रारंभ किया गया और मुझे एन.सी.सी. का प्रभारी बनने का सुअवसर मिला। 11 वर्ष तक एनसीसी का निश्चुक्त कार्यभार संभालने के दौरान अनेक उपलब्धियां हासिल की गईं। प्रतिवर्ष 2 एनसीसी कैडेट ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस परेड में शिरकत की। इतना ही नहीं एक बार परेड के अतिरिक्त 9 कैडेट्स ने गणतंत्र दिवस के पश्चात प्रधानमंत्री रैली में लोक नृत्य में भाग लिया। वर्ष 2006 में 19 एनसीसी कैडेट के साथ लेकर 8570 जि. श्रीरंज महारवै कैलाश पर्वत यात्रा की। आज महाविद्यालय में एनसीसी सुदृढ़ व्यवस्था का आधार स्थापित कर चुकी है। मुझे लगता है कि अध्यापक के साथ-साथ एनसीसी में मेरा अनुभव एवं 2 वर्ष तक राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी, 11 वर्ष तक स्टाफ सचिव का कार्य, महाविद्यालय की लोकप्रिय पत्रिका कामाक्षा में 15 वर्ष तक पहाड़ी अनुभाग कार्य, 2 वर्ष तक कालेज इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय इन्चार्ज विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका अभिनीत की। इसी दौरान मैंने अनेक आचार्यों के साथ काम किया। सभी अपने विषयों में पारंगत विद्वान थे। जिसदेह महाविद्यालय भारत के नव राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहां के गरीब छात्रों के लिए विशेषतः लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। इसका एक जीता जागता उदाहरण गांव चलांनी देहल में एक गरीब परिवार में जन्मा लड़का जो महाविद्यालय में बीएससी के दौरान प्लास्टिक की चपलों में आता था आज डॉ० होम चंद वर्मा आर्यभट्ट शोध संस्थान, नैनीताल में खगोल वैज्ञानिक है और अभी हाल ही में केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश धर्मशाला में प्रोफेसर भौतिक विज्ञान का पद संभाला है। 102 स्कूल में 5 कमरों में प्रारंभ किए गए इस महाविद्यालय में आज छात्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यहां शिक्षा प्राप्त छात्र हिमाचल में ही नहीं देश विदेश में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं जो आज करसोग महाविद्यालय का नाम बढ़े गर्व से लेते हैं। इसी महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त छात्र आज विभिन्न विषयों के प्राध्यापक के रूप में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। राजनीति शास्त्र में कुल 4 वर्गों में से 2 विद्यार्थी सोनिया चौधरी तथा डॉ० लता देवी कार्यरत है।

पवित्र मंदिर को कोटि-कोटि प्रणाम, ईश्वर करे यह महाविद्यालय दिन दूगुनी रात चौगुनी उन्नति करें और कालान्तर में संपूर्ण देश में खुशहाली व मानवता स्थापित करने में नीव की पत्थर सार्वत्र हो।

मैं पल दो पल का शायर हूँ,
पल दो पल मेरी कहानी है
पल दो पल मेरी हस्ती है
पल दो पल मेरी जगनी है
मैं पल दो पल का शायर हूँ,
शो मस्ट गो ऑन ३३.

डॉ० रायक राम लखुर
सह आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, दंग नारला, मण्डी

जय हो

करसोग एक ऐसा पावन पवित्र स्थान है जिसका हर एक कण देव गाथाओं की की अमर कहानी कहता है और इस पवन धरा पर विद्यमान राजकीय महाविद्यालय करसोग अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर प्रदेश में अलग अलग छवि बना रहा है। यहां का मेहनती, कर्मठ व अपने-अपने विषय में निपुण हर एक कर्मचारी इस महाविद्यालय को हर क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। अपने पूर्व जन्मों के अस्के कर्मों के कारण मुझे यहां अपनी सेवाएं देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस महाविद्यालय ने मुझे हर क्षेत्र में बहुत बहुत कुछ सिखाया है। मेरा 9 वर्ष का कार्यकाल मेरे लिए स्वर्णिम युग की भांति रहा जहां एक ओर कर्मठ शिक्षकों के मार्गदर्शन से विद्यार्थियों ने अपना नाम हिमाचल प्रदेश में रोशन किया वहीं मैंने उन विद्यार्थियों से बहुत कुछ सीखा और उसे अपने जीवन में ढाला। आज यह महाविद्यालय अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस शुभ अवसर पर दुआ करता कि यह महाविद्यालय दिन-रात उन्नति करे। बस ये पंक्तियां इस महाविद्यालय के लिए कहूंगा-

बढ़ रहा है हर कदम पर आसमान छूने को
बढ़ रहे हैं हम डगार पर मंजिलें पाने को
युवाशक्ति जन हो
जय हो यह शिक्षालय
करसोग महाविद्यालय जय हो



डॉ० प्रेम पाँल
सहायक आचार्य संगीत
राजकीय महाविद्यालय, अर्की

यादों के पटल से

“लड़की बड़ी हो गई है, सोलह सावन देख चुकी है।” इस वाक्य का मतलब मुझे कभी समझ में ही न आता अगर प्रभु की अपार अनुकम्पा मुझे पर न बरसती और मार्च 1999 में मुझे लौकरी की शुरुआत करने के लिए करसोग कॉलेज न मिलता। ततापानी



से होते हुए जब हम अलसिंडी के पचरीले पहाड़ों पर पहुंचे तो मुझे लगा इससे आगे दुनिया ही नहीं है। मैं डर गई और मेरा मन बैठ गया। अचानक मन में विचार आया कि मेरे भाई मेरे साथ बूट नहीं बोल सकते। उन्होंने तो कहा है कि मुझे करसोग बहुत सुन्दर और मननोहक लगेगा। अवश्य ही मुझे थोड़े सत्र से काम लेना चाहिए। जैसे-जैसे हम चुराग से आगे की ओर बढ़े तो मैं मन्त्रमुग्ध ही हो गई और चिंडी से नीचे जब मैंने करसोग को देखा तो मुझे लगा की जन्त यही है, यही है, यही है।

सच, तीन साल करसोग में रहकर मैंने खूबसूरती ही खूबसूरती देखी। जितनी बार मैं शिमला से करसोग जाती थी (बिश्क एक दिन के ही बाद) मुझे लगता था कि करसोग की वादियों में सचमुच आलौकिकता है, ऐसे ही यहाँ पर पांडवों का वास नहीं हो सकता था। जितनी बार मैं और गहराई से देखती, उतनी ही बार मुझे नजारा और भी बेहतर और, और भी मनमोहक दिखता। कभी पूरी घाटी हरी, कभी पीली, तो कभी भूरीय कभी फसले लग रही है, तो कभी कटाई हो रही है स हर ऋतु, हर चीज की अपनी ही अजूबी शान ! मन करता था बार-बार उन नजारों को देखें और खुद को समृद्ध कर लूँ स वह वचपन की पड़े हुई वह पॉकेट समझ में आई और तब मैंने माना की इन नजारों को जो सोलह बार देख लेगा, सचमुच में ही वह व्यक्ति दिलों-दिमाग से बहुत बड़ा हो जायेगा।

मुझे यह दिन आठ भी अकेले स याद है जिस दिन कॉलेज के भवन का उदघाटन होता था। सुदामन्त्री जी के साथ लौ और मंत्री आद्यों, हवन के बाद, व ही उदघाटन करेंगे स पर यह क्या ? अभी हमने बैठने के लिए जूत उतारे भी नहीं थे कि पता चला हवन खत्म हो गया है, उदघाटन भी हो गया है। अब मंत्री जी एक जनसभा को सम्बोधित करने जायेंगे। खैर ! इतना विशाल और खूबसूरत भवन अब हमारा था, हमारे लिए यही खुशी काकी थी।

एक धार गांव के दो बुजुर्ग कॉलेज की वन-निर्मित भव्य ईमारत को बाहर-बाहर से ही विहार रहे थे, जब मैंने तीसरी मंजिल से उनको कहा की आप लोग अंदर आकर पूरा कॉलेज क्यों नहीं देख लेंते स उनको चेहरे के भाव देखते ही बनते थे। हमारा कॉलेज ! वीस साल पहले शायद करसोग में

यह सबसे बड़ा भवन था तो, इसको देखकर, करसोग वासियों का सीना गर्व से कैसे न फूलता।

एक बार एक प्रयोगशाला सहायक की सेवानिवृत्ति पर उनकी रोती हुई दुःखी बीबी को, दुःखी मन से गले लगाते हुए मैंने भोलेपन में कहा “कोई बात नहीं, एक दिन हम सबको जाना है।” तब वह महिला तो शांत और खुश हो गई पर मेरी परभार मैम ने मुझे अकेले में ले जाकर समझाया कि, “पागल, ऐसा तब कहते है जब कोई दुनिया से जाता है, अन्यथा नहीं।” इतना अपनापन था मेरे करसोग के साथियों में। दस-बीस लोगों का हमारा करसोग कॉलेज परिवार बहुत ही सुखी था। मुझे कभी लगा ही नहीं कि मैं “नौकरी” कर रही हूँ। प्राचार्य महोदय हमारे साथ ऐसे रहते थे मानो हम सब उनका अपना ही परिवार हों। वे कभी किसी सामाजिक सम्मलेन में भी हमारे बगैर खाना नहीं खाते थे। शायद, इसी अपनेपन के कारण जब उन्होंने मुझे वनस्पति शास्त्र के प्रयोग करवाने को कहा तो मैं खुशी-खुशी राजी हो गई और बदले में बरसों बाद प्रयोगशाला जाकर मैंने अपना वचपन एक बार फिर से जी लिया।

यहाँ के बच्चों का तो क्या कहना। मैं यहाँ से एक टीम लेकर राजकीय कन्या महाविद्यालय शिमला गई। मैंने लड़कों से कहा की बेटा ध्यान रखना कोई भी ऐसी हरकत न करना जिससे की लोगों को लगे कि इन्होंने आज से पहले कुछ देखा-सुना नहीं है। तो बच्चों ने दृढ़-विश्वास के साथ मुझसे कहा कि, मैम आज तो क्या हम जिनदगी भर कभी कोई ऐसी हरकत नहीं करेंगे जिससे हमारे कॉलेज का नाम खराब हो। आज जब मैं उन्हें बड़े-बड़े ओहदों पर देखती हूँ तो बहुत गौरवावधि होती है।

गर्मियों के दौरान कमरा नंबर 17 में जब करसोग की वादियों की ठंडी हवा आती थी तो ऐसा महसूस होता था कि यहाँ की हवा में गर्मी तो क्या, व्यक्ति जिंदगी की किसी भी तकलीफ को बिना दर्द के सहन कर सकता है। आज भी मन करता है कि जिंदगी को थोड़ा पीछे ले जाऊँ और सुकून के वे पल एक बार फिर से जी लूँ।

डॉ० संध्या शर्मा,
अंग्रेजी में एसोसिएट प्रोफेसर।
डिप्टी कॉलेज चैल-कोटी, शिमला -12



बाबा मेरे

बरस चार वो
जीवन के मेरे
बाबा ममलेश्वर
प्रांगण में तेरे
आशीर्वाद...
वो आज भी



तू है विखेरे
रखिल सुनहरे
वो बहुतेरे
रखेह,साधिये,समर्पण
में ये उकेरे
साक्षी हैं परिसर
के वो गलियारे
परिसर या जैसे
‘गुलशन’
खिलते थे कमल’ (गुरु जी)

मुस्कुराते थे पंकज
मिलते कृष्ण-सुदाना
होता था विनोद
प्रेम-प्रेम पौल
से चमकता था तारा
बहती थी अदिरल
सोम’ धारा
जब’ बोलते थे
सब रुचिये
ते ब्रज’ महाराज की
बैठ यमुना’ तीरे
विनय ‘था कुलभूषण’
तो गौरव ‘प्यारे’
लता’ बन विद्यार्थ की
सावित्री’ थी प्रिया’
उजाम’ कर शालीनता’ से
जुट जाते थे
सारे तेरे सहारे
जब बनते थे
बंधु-बांधवो के
आत्मीयता के धरे
घूने जलते थे
खिझड़ी वीरबल’ की
स्वादु पकती थी
कभी इस
कभी उस डेरे

श्रीमन जैनेश ‘संग
ये वारे न्यारे
बरस...खो जाता हूँ
आज भी...कभी-कभी
सांझ बले...सुबह रावेरे
बरस वार वो
जीवन के मेरे
बाबा ममलेश्वर
प्रांगण में तेरे
बाबा मेरे बाबा मेरे

डॉ० वी. एन. कपूर
सहायक आचार्य, समाज शास्त्र,
राजकीय महाविद्यालय, टंग

मेरा महाविद्यालय

विद्यालय में विताया मेरा प्रत्येक क्षण
खुदर स्मृतियों का गुलदस्ता है जो हमेशा
मानस पटल पर रहता है। इस महाविद्यालय
ने मुझे केंद्रीय छत्र संघ के अध्यक्ष बनने का
शुभ अवसर प्रदान किया जिसमें महाविद्यालय के इमानदार
कर्मठ प्राध्यापकों एवं प्राचार्य जी का मुझे बहुत सहयोग मिला
है। नेतृत्व कौशल से अनभिन्न मैं कब नेतृत्व सहयोग में सक्षम
हो गए पता ही नहीं चला। यह सब करने में मैं प्राध्यापकों के
आशीर्वाद से ही सफल हुई हूँ। गुरु और समुद्र दोनों कह रहे
हैं पर दोनों में सिर्फ फर्क एक ही है, समुद्र की गहराई में
इंसान डूब जाता है और गुठ की गहराई में इंसान तर जाता
है।

समय-समय पर मेरे सहयोगी मित्रों ने भी मेरा
मार्गदर्शन किया है। मेरे मस्तिष्क में उन सहयोगी मित्रों की
स्मृतियां भी बनी हुई हैं। मैं अपने शिक्षकों के सहयोग के
लिए आभारी रहूंगी जिन्होंने हर क्षेत्र में चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो
या कोई अन्य क्षेत्र हमें एक अच्छे इंसान बन कर जीवब
यापन करना सिखाया है। हमारे समय से यह महाविद्यालय
निरंतर उन्नति कर रहा है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि यह
महाविद्यालय दिन-दुगनी रात-चौगुनी उन्नति करे।

आरती राणा

केंद्रीय छत्रसंघ अध्यक्ष 2011-12



यह जो सफर शुरू किया था मैंने

यह जो सफर शुरू किया था मैंने,
वो जो सफर शुरू किया था मैंने।
जन्म लेकर इस दुनिया को आँसों से देखना
शुरू किया था मैंने।
मेरे गुरुओं ने मुझे अलग अंदाज में देखना
सिखाया है,
ऐसे ही मेरे मन में आगे बढ़ने का जज्बा आया है।
मिल रही जो खुशियाँ मुझे आज वह राह गुरुओं ने दिखाई है,
उचित-अद्वैत की परिभाषा इन्होंने ही सिखाई है।
आगे बढ़ूँगी , लड़ूँगी हर हाल में, सही राह पर चलींगी,
उनकी दिखाई राह पर चलकर एक अच्छा इंसान बनूँगी।

हीना
केंद्रीय छत्र संघ अध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय करसोग

My Experiences at Govt. College Karsog

I am delighted to know about the Silver Jubilee Celebration of Govt. College Karsog. This is a very good initiative taken by the Principal, College Faculty Members, Non-Teaching Staffs and other Local Stakeholders. I congratulate all the organizers for their vision and efforts that are being put in to make it a grand success. This will be a milestone in the history of the college, and add as a feather on the hat of this institution.

My entire service as a state govt. employee was rendered in this college. After completing my university education, I was appointed by the state govt., through HPPSC, as a lecturer at Govt. College Karsog, Distt. Mandi (HP). I joined as a lecturer in physics at the Govt. College in November, 1997 and served in the same institution till September 2012. In practice, I worked there in two big time spells: 1) November, 1997 – November, 2001 and 2) December, 2006 – September, 2012. I joined the Central University of Himachal Pradesh (CUHP) Dharamshala as Associate Professor in September, 2012.



Besides, from December, 2001 to November, 2006 (5 years), I was on EOL for study in abroad from this college. During this period, I did my Post Doctoral Research (PDF) from Technical University of Lisbon, Portugal. Academically, this step was a great leap in my research career and that too from the launch pad of this college. I got a chance to visit the premier research facilities in a number of countries including Switzerland, USA, Russia, France, Germany, Sweden and Italy. In fact, I got an international exposure and collaboration to have a good number of research publication in credit.

I remember, in the first spell of my service at Govt. College Karsog (1997-2001), I was quite young, enthusiastic, but less mature. However, apart from routine teaching work, I do contribute substantially for the holistic growth of the institution, such as I started a club for science students (Wonder Science Club) in 1999, and worked as Staff Secretary of the college (1999-2001), Head of the Physics Department (1997-2001) and delivered several motivational talks to the students. This period brought a great fortune for me, as I got a chance to visit International Centre for Theoretical Physics (ICTP), Italy for two weeks in 1999; completed my PhD degree (2001) and got PDF in abroad (2001). I was active in the social sector too, as I worked as the President, Amity Club – A social group of Class-I Gazetted Officers in Karsog (1999-2001).

After spending five years continuously in Europe, I joined back in the institution, and this time I was quite confident, stable, well experienced, and a mature person. During this period (2006-2012), I was quite engrossed with the teaching, research, and all round development of the college. I had quite a good international exposure to share with my students and colleagues. In 2010, I got selected for the first time from Himachal Pradesh as the Visiting Associate of Inter University Centre for Astronomy & Astrophysics (IUCAA), Pune.

During this period, we established Save Energy Club in the college, utilized UGC grant of 75 lacs for various development works of the college, like IT Lab, UGC Network Resource Centre, Library books, Girls' Hostel and Day Care Centre, etc. Apart from that, I worked as the Team Leader for developing, designing & launching of the College Website: www.gckarsog.org. For the first time, we constituted Old Students' Association (OSA) in 2009, and I worked as the Co-ordinator. I worked as an active member and convener of several executing bodies of the college, such as College Advisory Body, Internal Quality Assurance Cell (IQAC), Student Council and Grievance Committee, Library Committee, Day Care Centre and Hostel Committees, etc.

The biggest thing during this time, I would consider, was the NAAC accreditation of the college for the first time. I worked as the Co-ordinator, Steering Committee of young and enthusiastic members for the development of SSR and its validation before the NAAC Peer Team (June 2009-11).

In addition to that, I also worked as Co-ordinator, IGNOU Study Center, Govt. College Karsog (June 2008-2012), Member, Enquiry Committee(s) and Inspection Team (s) of HP Govt. time to time. I worked as Sr. Suptd., Centre Suptd., Dy. Suptd. in the annual UG and PG Exams of various bodies, Universities, Centre Suptd./ Centre In-charge in Term End Exams of IGNOU. I also worked as Vice-President, Himachal Govt. College Teachers Association (HGCTA local unit: 2010-12).

With the help of hardworking and innovative colleagues and talented students, I organized several programmes and functions for the students and faculty members, such as National Science Day(s), AIDS Day (s), Hindi Diwas, Two-Day Workshop (4th-5th Feb, 2011) on Competence Building, funded by UGC, One Day Silver Jubilee Workshop (10th Sept, 2010) on the Role of Open Distance

Learning in Building Knowledge Society and Career Counseling programme(s) time to time.

Given the temperament, I used to enjoy and actively associated with the social activities in and around the Karsog area. I organized several community camps on yoga and health awareness, science popularization shows to the school students, seminars on Vedic science and traditional knowledge, organic farming, motivational lectures on open and distance learning targeting to the poor & deprived section of the society in the rural areas. Being closely associated with Thakur Jagdev Chand Samriti Shodh Sansthan, Neri (Hamirpur) since 2007, I organized a two day symposium in the college on history writing of temples of Karsog areas. I was also holding the social responsibilities like the Co-ordinator, Organization of Govt. Officers, Bharat Swabhimani Trust for Mandi District, HP (2010-12), Co-ordinator, Indian Foundation for Vedic Sciences (IFFVS) for North-West India (2007), Tehsil Prabhari (President), Patanjali Yog Samiti, Karsog, Mandi (HP) (2010-2012). In a nutshell, I had a very fruitful time of my job career in Govt. College Karsog, and wonderful experiences and sweet memories with the students, faculty and staff of the college, and the people of Karsog as a whole, which I would never forget in my life.

Prof. B.C. Chauhan
Department of Physics
C.U Kangra



An Appraisal of Human Values

For any society of the world, the rich human values are very important and essential as these values help to put the society in order. An environment of tranquillity and happiness is created in the society with these values. It is evident from the religious books of all religions that the human values are very important. The people of Satyug were very happy, contented and rich, as they had very high human values in the society of that time. A sharp decline in human values has been noticed after Lord Krishna in Duaper Yug who always made the people aware about the fruits of bad deeds and used to advise them not performing any bad action on their part. The education system was very good in those days and the quality education was imparted in Gurukuls Ashrams by Saints and Rishis. As on today, the education system is not so good as it only helps in catering to our physical needs and not mental one's i.e. spiritual one's. It is advisable to incorporate our rich human values in the present education system too. Value based education should be imparted right from the primary to the higher education.

Sh. Sudama Ram
Associate Professor
Department of Geography
Govt. College Karsog

Quest for Wisdom : An Experience

Change is the integral part of life so happened with me. Unaware about the ups and downs of life I first time joined as an Assistant Professor in the subject of Economics on dated 25th October, 1999. At that time the building of GC Karsog was not as beautiful and spacious as it appears today. Classes were started in the adjoining two storeyed small size building of GSSS Karsog. The problem of infrastructure and vacancy of teaching and non-



teaching employees was quite common at that time. The size of Rooms was narrow and there was inadequacy of several teaching aids also. There were only two academic streams namely Arts and Science when I joined the college. Teaching in Commerce stream took place later on. Due to my quest for wisdom, I kept my mind open for learning and it was special opportunity to learn multifarious teaching and administrative skills from learned principals and teachers. In this reference the contribution made by that time principal Dr.S, N.S Tyagi was memorable. His passion for teaching along with administrative assignments was commendable. In his own words he used to say, "I love teaching, I am teacher first and Principal afterwards. The Principal and spiritual person like Dr. H K Bhardwaj had an indelible impression about spiritual awakening in the core of my mind. The constructive and participative leadership style of principal Sh P.S. Thakur gave a historic momentum to this college. The contribution made by the courageous and dynamic women principal like Dr. Saroj Chauhan Jaswal and Dr. Kiran Lohia is in fact appreciable. As a young man I could learn various teaching, examination and personality skills from senior and learned professors like, Dr. B.C. Chauhan, Dr. D.R. Thakur, (late) Dr. Satish Sharma and Dr. Tej Singh Verma. Interaction with disciplined students of GC Karsog is highly appreciable. Apart from 14 years teaching and learning experience with GC Karsog, the assignments like NSS Officer, NCC Incharge, Editor of magazine Kamaksha had insurmountable contribution in shaping my personality. Spending time with NSS volunteers and beautification of campus and organising various camps is still alive. Trekking tours to the vicinity areas like Dhamun Temple, Shikari Temple by Shiva dehra, and GC Karsog to Charog was full of thrill and joyous. The love and devotion to GC Karsog gives me one more chance to serve this college for second tenure after a

break of 6 years from GC Seraj at Lambathach. In concluding remarks, hats off to recently retired principal Dr. Kamal Kant for accelerating the overall growth path of this college and the sincere efforts made by present Principal Dr. Deepa Sharma shall have everlasting results in coming future. It is nice and matter of proud for me to be active participant of the 'Silver Jubilee celebration' of GC Karsog.

Dr. Labh Singh
Assistant Professor
Department of Economics
GC Karsog

GC Karsog guided a generation in need and now ready to next leap

Silver Jubilee is proud moment for any institution as well instant to peep into evolution to present state and look ahead of time. It is quite appreciable that GC Karsog is celebrating its Silver Jubilee this year since its inception in 1994; this will give an opportunity to review journey of evolution of collage, and appreciable are efforts to see the journey through the eyes of many who remained associated with this institution during last twenty five years and has contributed in one or other way in journey of college, which will not only give one sight exploration of whole journey in a go but also give insight and reflection for the future journey as well. It is my pleasure to appreciate that this college has provided higher education to the youths of remote area of Karsog, who otherwise would have been deprived of it, especially girls. These I have personally witnessed while my teaching tenure from 2001 to 2006 in this institution. And it is quite satisfying that students educated from this college can be seen successfully contributing to society in all walks of life not only in local area but throughout India. Local working population is full of alumni of GC Karsog. I remember that despite limited



resources, this college with the help of its various activities and intra college institutions has provided environment for wholesome growth of young students. The wonder Science Club we used to work in has organized various activities like science talk, educational tour to give student enough exposure and scientific insight with fruitful results. I would like respectfully mention Professor Kuljeet Singh and other with whom I worked at that time in WONDER SCIENCE CLUB. One of the best practices existent in this college specially being a small establishment was mutual coherence of all faculty members which not only make it a close administrative unit but, everyone has opportunity to develop his/her persona and also students get benefited by this coherence. I can recall that Sh. H.K. Bhardwaj the then principal and Sh. P.S. Thakur, senior faculty members Sh. R.R. Rohi, Dr. B.C. Chauhan, Sh. D.R. Thakur and all the other colleagues worked together in unison and was truly environment of institutional family; there even happen informal discussion about individual students and guidance thereafter. I have learnt and developed a lot with in myself during this period. Hoping institution has maintained such practices and will be serving and nurturing the local youth in future and become synonyms to small town of Karsog which will always provide unforgettable stint to everyone who work here by virtue of natural scenic beauty of valley, surrounding enticing ranges and pleasant climate.

Sanjay Kumar
Principal (School Cadre) Govt. H.P.



All I Remember of a Beautiful Journey

On this memorable occasion of Silver jubilee of the college, I congratulate all those who were the part of this memorable journey. I feel very proud to be the part of half of its



journey which started way back since 1996. Remembering those Golden days when I was the student of this college, I recall the time when the institution was running in private rented building. Although the number of students was few yet the teaching staff was well experienced. My friends were from different streams and were from far and wide places. College life was full of academic activities Cum Extra Co-curricular activities. The study tour was important part of education at that time. The teachers used to toil hard to make the institution a leap forward. I remember Dr Kamal, Dr Vijay Kundal, Department of Bioscience and many of my friends. They succeeded in making a better future of all of us including me. I feel myself extremely lucky to be appointed as teacher in my Alma matter. I still remember my first day of teaching when I was introduced to the students by my senior colleague, Dr. D.R. Thakur. From that day I was officially the part of Institution and a passenger on the same car of institutional journey towards excellence. Teamwork matters a lot as well as the cordial environment among stakeholders are the key to success. The institution got NAAC accredited in 2011 and reaccredited in 2017 and got 'B' grade on both the times is a matter of pride for all of us. I along with my colleague witnessed the growth of Institution and students who got the opportunity in many platforms. I am lucky to witness many amiable, knowledgeable, helpful and amazing leaders /Principal of the institution. At last, I want to appreciate the contribution of the students especially NCC NSS / Rover & Rangers / Dramatic clubs/sportspersons and merit holders without them the journey would not have been meaningful.

Their perseverance and hard work have added many feathers of achievement. Today I salute them for their zeal to strive for excellence. The institution journey is a historical landmark for the people of this rural area. There is a long journey ahead and I wish for its ceaseless success in near future.

Mr. Pankaj Gupta
Assistant Professor, Zoology
Govt. College Karsog

Golden Days of my life in Govt. College Karsog

My memorable moments in Govt. College Karsog are the Golden Days of my life. As a student of this College, I really lived every moment in this campus. The campus opened a wide horizon of learning experiences in various fields. The faculty has been role models in all aspects and we learn a lot from them. Teachers played a vital role in shaping my personality in a amiable way. I would like to thank each of them for what they taught me and my sincere thanks to them for inspiring, supporting and motivating me every time. It was a joyful learning process. In brief, I would say that the exposures and the experiences I had in this college were not only an unforgettable thing in my life but it also laid foundation for my career. I am happy to state that my career's base was designed and started from the Government College Karsog. I take this opportunity to thank my teachers, and College for every thing they had done for me.

I also served as a teacher in this College during the years 2016 to 2019. Joining Government College Karsog was my all time dream. I considered myself lucky for getting opportunity to serve this college. During this period, the journey in the college was exciting and challenging. This period offered me growth in all possible directions. The friendly, encouraging staffs always made me feel comfortable



to work honestly while dealing with official assignments. Teaching in the campus was also a learning process. Every moment of teaching, I was made to feel like a student and it was really a challenging period for me to update myself academically. Working in this college, I have learnt some of life's precious lessons, like that life may take lot of unexpected turns and twists but we can face it with courage and confidence. I feel proud, happy and contented today for being a part of this college. In this college I met motivated and hardworking students and they are doing great. To the students, I would like

to say that each one of you will make an impact on this world, but some of you will make a global impact. What matters is that always believe in you. So be confident and work hard to get your dreams come true. I thank God almighty for having given me an opportunity to be a part of this college. May the college excel in all its forth coming endeavours. My good wishes will always be with the college. Thank you Government College Karsog, I owe you a lot.

Dr. Prem Prakash
A.P. Economics in G.C. Lambathach

An Ode to Government College Karsog

My felicitation for all who have been a part-n-parcel of the institutional life of Govt. College Karsog as it celebrates its Silver Jubilee this year. I too had a brief stint as a teacher in this prestigious institution, which is playing a key role in upgrading and transforming the scenario of higher education in the culturally and economically significant corner of District Mandi, i.e. Karsog from October 2016 to July 2018. The very first day I entered the campus on 4 October 2016 is permanently etched in my memory as the entire college fraternity readily welcomed me and was more than keen to make me feel at home. It has been for me a loving, fruitful and continued association with the college ever since and I try to find opportunities to visit the college and meet my friends very now and then.

As I sit down to write these words, it is with full awareness that my memories of the college are bound to elicit an emotional rather than a logical recounting of my association with this institution. That is why I have titled it "An Ode to Government College Karsog".

My induction into the college was primarily an induction into a youthful world as all my colleagues were relatively younger to me. I used to feel very awkward when all of them would stand up as a mark of respect whenever I entered the staff room. However, this was soon to give way to tete-e-tete over tea wherein some of the inhibitions of communication began to break down and it became a personal as well as a group ritual all of us looked forward to everyday. I also fondly remember the lunch break we had crafted to share our fondness for each other over shared food. And it used to be a royal feast indeed with so many different kinds of dishes to savour.

There were occasions when I would be cross with my young colleagues, especially during the time when we were preparing the Self Study Report of the college for institutional accreditation by NAAC. We would work late hours and I found myself shouting at them during the last few days before the visit by the NAAC Peer Team. My young friends must have resented it, but never did they retort in any way. In fact, they were more than eager to appreciate and celebrate the hard work we were trying to put in for the sake of the college and manifested their spirited support in several ways. Those days we also used to have dinner together and I once expressed the desire to eat vegetable biryani for a change. The boy who ran a food joint did not know how to prepare it, but my jaws were on a war footing to get the job done. They were ready with online recipes for biryani and stood guard behind the cook to guide and help him prepare it. This remains the best biryani I have tasted till date.



The creation of the platform for the stage, which now stands in the middle courtyard of the college building, is another memorable episode of the commitment of teachers as well as students to institutional life. What started as an initiative by the volunteers of NSS, NCC and Rovers and Rangers was to become a mass movement of sorts as students from different teaching departments joined hands to create this platform. It was an epitome of selfless service to the institution. Government College Karsog has evolved a rich academic and cultural atmosphere for the growth and development of its students over the years. The college is equipped with a state-of-the-art IT infrastructure, with smart classrooms, IT laboratories, Language Lab along with the essential software required for educational and training purposes. The teachers engage actively with the students to help them prepare PPTs on their courses of study and to make them proficient in the use of basic IT skills. In fact, it is a unique, student-centric feature of this college that the IT Lab is freely accessible to all students. It was a sad moment for us when Government College Karsog could not be incorporated into the ambit of the first Cluster University of the state in Mandi because of its distance from the headquarters. Nonetheless, the college has the requisite potential to evolve into an institution of eminence by providing academic and cultural leadership to other educational institutions of the region. The teachers need to make their approach more research oriented though. It is also of dire importance for the college to introduce more need based, contemporary courses of study in addition to academic subjects to fulfill its responsibility as the only institution of higher learning in the region. Appropriate courses in horticulture, floriculture, food technology, and fabrication industry and travel and tourism management and so on appear to be highly viable for this college in near future. The college may also consolidate its position as cultural leader by properly documenting the traditional resources of the area and creating an archive thereof for preservation and maintenance of the culture and heritage of the local people. Of course, the college may have to walk an extra mile to accomplish this.

Here's wishing all big and good things for the college family in its Silver Jubilee Year!

Dr. Janesh Kapoor
Principal, G.C Darlaghaat

A Sweet Touch of Memories

It was the 10th of June, 2010 when I reached Govt. College Karsog to deliver my services as Assistant Professor in Chemistry. Every thing was new for me, new place, new people and a new work spirit. It was a wonderful journey from a research student to a college teacher. There was a huge excitement, thrill, new dreams, new hopes and many expectations. I still remember my first day of job; I handed over my joining to Dr. Saroj Chauhan Jaswal the then college Principal. It was a great compliment for me to join under a person who was my teacher during my college days. My father was with me on first day of my new journey. Principal introduced me to all staff members. Though all were new to me but seemed quite familiar. Now next step was to search a safe and secure place/house to live in as I had to stay alone there. Although many houses were available, yet it was really difficult for me to find the best one. By God's grace I found a beautiful apartment where both landlords as well as neighbours were very nice. I received their plenty of love, care and cooperation during my stay over there. I spent three years duration at G. C. Karsog and got transferred to G. C. Sunni on 18th July, 2013. During my three years stay at G.C. Karsog I received every body's good company and cooperation both in my professional life as well in personal life. I became friends with a bunch of new people and developed new social links. I am still in touch with a few of them. Life is full of



many ups and downs. Many times I got stuck in emotional dilemmas too but somehow was able to manage every thing. All the staff members teaching and non-teaching ones were very friendly, loving and cooperating. There are many sweet and memorable moments I shared with fellow colleagues. I remember the outings to Shikari Devi Temple and Kamru Nag lake temple with fellow teachers which I enjoyed a lot as I love trekking. Dinners and lunches with madam Seema Banta, Prof. Kulbhushan Sharma and Prof. Vinod Sharma are also the part of sweet memories. Every single member of the staff inspired me and I learnt one thing or other from every one. In my own department, company of Prof. Mohinder Singh is really memorable. He is a thorough gentleman, very cool, cooperative and hardworking fellow. He provided me a lot of care, comfort and guidance like an elder brother. Students of Karsog were also very hard-working. It gave me a lot of joy and happiness to find them very curious to learn. Positive response, progress and success of students are real earnings of a teacher. Many of my students got admission in HPU and other institutions of higher learning. G.C. Karsog is encircled by a beautiful valley, remarkable landscape which always attracts me. Kamaksha Mata Temple near the college and Mamleshwar Temple on the way to college provided moments of peace and solace whenever I used to visit these places during low times and fasting days. There are a lot of many more sweet memories which still keep me emotionally involved to this beautiful place.

Dr. Godawari Garg,
Assist. Prof. Chemistry
G. C. Sunni (Shimla)

My First Posting in G.C Karsog

As an Assistant Professor, it was my first posting at Govt. College Karsog. I came to know that Karsog is far away. I feel annoyed and ambivalent because of my personal and domestic circumstances. Finally I joined this college on Last joining day. I have spent my four years in this college. It was a wonderful and memorable period of my life. The sweet memories of Karsog are still fresh in my mind. Even after six years of my transfer, it seems to me that my service at this college was a yesterday's affair. We had a team of young and dynamic colleagues and a few senior staff members who were always been guiding for our professional development. I strongly feel that I may never get this kind of team and work atmosphere in my future.



Harvinder Singh Saini
Assistant Professor GC Nalagargh



My College Experience: The Most Glorious Phase of Life.

On the occasion of Silver Jubilee of G.C. Karsog I am grateful to the Lord Shiva to grace us such a beautiful and pious temple as this College in his own land Mumail. I am thankful to Principal and staff at G.C. Karsog for giving me opportunity to be a part of this historic event. I had joined the college during the year 2000 and passed out in 2003 as the Bachelor of Science. The year 2yK was in itself a new century year and a beginning of new era in my life also. When I got admitted in college after passing senior secondary class everything looked changed. The most interesting and exciting was the new campus of the college. In the first year of B.Sc. course, I met with new friends from different areas, introduced with each other and shared many ideas and beautiful moments. The most interesting memory I recall was the introduction with seniors. The very cool air and clear environment of the college campus created a constructive place for the study and walk around. The walk of few kilometres from Baral to College was very pleasing and eventful as our school friends, juniors, seniors and teachers used to walk on foot together. I missed this walk always whenever I travel alone. The whole of the year passed like a storm with fun and friends all together now we had examination in April, 2001. The local Nalwar fair had always released all pressure during the examination as there was a perfect timing of both in the college campus. In the year when we became seniors, we were confident and courageous. During this year I took interest in many other activities of the college especially in sports. During sports I came to be familiar with senior players and had the chance to interact with talented coaches and famous sport persons of the area. I always miss the chemistry practicals where we learnt many things, of course some naughty things also. The day I remembered most was our college Farewell Party day when we bade 'Good By' to our seniors, waved and danced together on the college culture themes. The final year started with a feeling of being senior and responsible class in the college. We had to complete everything in this year so we started very earlier in all fields. It was most wonderful year of my life. We had a group of thirteen in B.Sc. III class, not just a class but more than a family together. I was fully aware of responsibilities when college elected me as the President of Wonder Science Club and nominated as the member in CSCA. I found the chance to lead and organize many activities in college especially campus plantation. During this year college also organized its first inter-college event as inter-college boxing (men & women) championship. We were the part of the organizing committee and gained a lot of experience. This year I was selected in College cricket team and played a wonderful match at G.C. Sarkaghat that was an unforgettable experience since ever, thanking Mr. Vikrant Gautam sir for providing this opportunity. The college tour to Jalodi Pass (Sareolsar) Kullu and educational trip to Chamba left their memories in minds forever even today when I close my eyes I have those moments still afresh. And the last day which pains till today was 14 Feb, 2003 when we were given the farewell party by our loving juniors. The Annual Day Function awarded us all our college life achievements at the end.

The teachers at that time casted a future image on my mind especially our Principal sir Dr. S.N.S Tyagi who taught us even after their busy schedule. Chemistry teachers Dr. Raj Kumar and Mr. Mahender Thakur became role model of my life, I am today standing anywhere only because of them. During my college life I was also impressed with non-teaching staff of college Sh Begi Ram ji, Sh. Sant Ram ji and Ms. Pooja ji. My friends Dayant, Yashpal, Satpal and Vikrant always helped me and tolerated me whenever I used to get angry with them. Seniors Mr. Jai Kumar Gupta, Mr. Dharmender, Pushp Raj, Ankush Thakur and Surender Singh had impressed me with their personalities. Outside the campus, all bookstore helped me in providing study materials and shopkeepers helped in catering to our daily needs, I thank all those without whose blessings this present journey of my life would not have been possible.



My overall experience at G.C Karsog has taught me one fundamental thing that life is unpredictable. It might be good, it might be bad and it might not interest you. But it is the College life which prepares us for all of this. It is a perfect blend of joy and hardships. We meet different people, interact with them, learn about their cultures and grow as a perfect person. We understand how to talk to different people and how to judge their behaviour. The college is like Santa Claus that keeps on giving all these wonderful opportunities while we are in it. This golden period equipped me with all necessary apparatuses which proved to be helpful in tackling all the challenges which I faced after college life and formed a strong foundation of knowledge. I feel happy and proud that college has been upgraded as PG College now. I wish all success, glorious and historic future of this college.

Jai Bharat, Jai Himachal, Jai Karsog.

Dr. Naresh Kumar
Assistant Professor

Department of Chemistry
M.L.S.M (PG.) College, Sundernagar
Mandi (H.P.) 175018

A Great Opportunity and Experience

It is indeed very gratifying to know that Government College Karsog is going to organize its Silver Jubilee celebration. One fine afternoon, I was watching final match of All India Civil Servant Kabaddi Championship with my colleagues in Rajiv Gandhi Government Degree College at Chaura Maidan (Kotshera), Shimla-4, hosted by Himachal Pradesh Secretariat sports team. Coincidentally, I received a call from my friend Prof. L. D. Thakur, Assistant Professor in Department of English, Govt. Degree College karsog, who informed me that Govt. Degree College Karsog is going to celebrate its Silver Jubilee on 28th November 2019 and asked me to share your experience as a student of this premier institution of higher education. This was a proud movement for me. Lots of memories started rushing into my mind like floodwater into a sea. The very first thought that came into my mind was sincere gratitude to my beloved teachers, and this great institution Government College Karsog (located in a divine land of Lord Shiva and Kamaksha Mata, and work field of Pandavas during their Agyatvas and meditation place of Mahrishi Parshuram), which rejuvenated my life.



College life is a very responsible and interested 2 stage of life for every person. It brings a whole bunch of changes, new emotions, liabilities and challenges. College life experience was special for me, being the part of pioneering batch of this premier institution of higher education, I feel much honored to share my experience as alumni of very first batch student (July, 1994 to June 1997) of this college. In very first year of this college, there was only two faculty social science and Non-medical in science faculty. There were 192 students' enrolled in social science and 10 to 15 enrollments in Non-medical. To take admission in the first academic session of this college was a great opportunity for all of us. We got the opportunity of higher education in our home place. For me, it was proved real boon and it is because of this College I got the opportunity of higher education. If the College was not announced and functional from 1994, I would have been definitely deprived to doing my graduation on regular basis and would not be able to achieve my present destination. This institution of higher education has enriched my life in many ways and provides me so many opportunities to groom my personality and offered required exposer. It has provided me with the necessary tools to enhance my skill more and taught me valuable knowledge about this diverse world. As we know, the welfare of humanity lies neither in scientific

or technological advancements nor in acquisition of material comforts. The main function of education is to enrich the character. This statement becomes universal truth for we people. This particular institution played important role in shaping our attitudes and prepares us for behaving in a certain manner in defined situation. Above all, this college provides me excellent group of friends, who contribute a lot during my college days, those movements of togetherness and mutual harmony remain always with me. In this ways I experienced the golden period of my life with fellows friends in the college.

Although our batch (First Batch) sacrifice a lot in respect of physical infrastructure specially building and sports activities, but we were lucky enough to have very experienced faculty of the state in that time in the college namely Prof. G.C. Sharma (Economics), Prof. A.S Anand (English), Prof. O.P. Kaushik (Sanskrit), Madam Shanti Chauhan (History), Dr. Rajender Verma (Hindi), Dr Shashi Sood (Mathematics), Dr. Meena Sood (Chemistry), Dr. Sirvjeet Singh (Physics) and Dr. Dayak Ram Thakur (Political Science) and Principal Dr. D. N. Kapoor etc., These teachers were really icon for we people and proved treasure of knowledge for us. We spent whole period of college time in Govt. Senior School Karsog building, but our teacher left no stone unturned to nurture our personality with limited available resources. Every word of our teacher was blessing for we people and there was very healthy atmosphere in the campus. Therefore it proved the temple of higher learning majority of us. With full of values, moral character and enthusiasm, majority of the students of first batch students have done remarkable contribution in their respectable fields and area of interest.

In addition to academics the other activities of personality development in the college were sports, culture and NSS. I got opportunity as the volunteer of National Service Scheme (NSS). In this activity we learned about the dignity of labour and the spirit of nationalism through community services. National Service Scheme contributed a lot in my life specially time management, togetherness, self-confidence and other social values and skills. Prof. G.C. Sharma was our programme officer and we organized first ever 10 (ten) days NSS special camp at Mahun Nag Temple during last week of December 1996. Being the local resident of Mahuna Nag I tried my best to the mega success of this NSS special camp and I was awarded by best volunteer of NSS in this very first special camp of Govt Degree College Karsog. I also got the opportunity to develop my writing skill as the editor of Planning Forum section of college magazine "KAMAKSHA" and able to collect and publish the manuscripts of our fallows students. I feel proud to share that Government Degree College got cash prize of Rs. 25000 to publish the original and quality articles in this very first edition of college magazine. Overall I learnt a lot during my graduation from this institution and gain very good image among my friends and teachers. This is all about of such unforgettable memories of this college, which depict my life and destination. I am highly thankful to my reverend teachers who equipped me with knowledge, love and affection to face this divorce and complex world with special social skills, especially Prof G.C. Sharma who encourage and guide me in every time till tade. Because of their guidance and blessing I am able to think broadly and develop my analytical approach and finally set my aim of life. With the blessing of teacher and parents I did my graduation from Government Degree College Karsog in April, 1997.

After my graduation, I joined Himachal Pradesh University for higher study with other two students of this college Mr. Lala Ram in M.Sc. Physics and Miss Deepa Thakur in M.A. history. I did my M.A in economics in June, 1999 from the department of economics, Himachal Pradesh University Shimla-5. I qualified UGC (NET) twice in December, 1999 and June, 2000. After qualifying UGC (NET), I did M. Phil and Ph. D in economics from HPU Shimla. Despite facing so many hurdles and losing my parents during my student life, I never compromise with my study and by the blessing of my teachers and well-wishers I was able to complete my required educational qualification.

I joined teaching profession in July, 2002 in HPU Regional Centre at Dharmashala, and also rendered my services in most reputed colleges of state namely Govt. Degree College Dharmashala and Vallabh Govt. Degree College Mandi. I also got the opportunity to serve in newly opened college Govt. Degree College Dharmi at 16 Mile, Where I learnt how challenging job is to establish a new institution. At present, I am working as an assistant professor in Department of economics, in Rajiv Gandhi Govt. Degree College Chaura Maidan Shimla-4. This is the brief memory of 25 year journey started from Govt. Degree College Karsog. I am and will be indebted of my reverend teachers and parents and above all the great institution Govt. Degree College Karsog, which contribute a lot in enriching my character and shaping my life. I usually do visit in Govt. Degree College Karsog continuously till date, whenever I have spare time. This particular institution proved so many milestones in the field of higher education from its inception in 1994. I pray to almighty that Govt. Degree College Karsog may archive new height of growth in the path of higher education and prove new milestone not only in state but in National and International repute. I would like to thank from the core of my heart to each and every teaching and non-teaching faculty members who contribute and render their valuable services during the journey of 25 years of success of this institution.

Dr. Ram Lal Bhardwaj
Assistant Professor in Deptt. of Economics
Rajiv Gandhi Govt. Degree College Chaura Maidan
Shimla-4

A Retrospection

Flipping through my fancy and traversing and endless meandering road to the place when I came here for the first time on transfer, I was much intergued and apprehensive at the core of heart as to what it had to offer. Little did I know then that this tenure of teaching would leave behind fond memories for a life time to cherish! The façade of college and the breathtaking landscape of Karsog valley enchanted me no less. Later on I came to know as a well equipped, effectively managed institutions comprising curious, brilliant, enthusiastic well groomed yet unboosting stakeholders who not only drew scholastic focus of an outsider but also offered new dimensions for a better work place than most of others institutions of the state as a part of this institutions, I had been a witness to the metamorphose of this conventional temple of learning into a "smart institutions" offering smart devices using update technology in its computer labs, language, Seminar hall, Examination hall, Library and classrooms. Thus providing wider linkage to the world of knowledge, no doubt within the perview of able leadership and benevolent grants of UGC in all these glorious twenty five years college has been tested successful in two cycles of NAAC, documenting its excellence in imparting holistic education to the students not only at undergraduate level but to post-graduate students of four different disciplines.

Participation of our students and volunteers in cultural activities, sports, NSS, NCC, Eco- Club, Rover and Ranger is equally commendable are the mentors, in fact that our students have been winning laurels and national and state levels and making us proud by their accomplishment in many fields is an obvious outcome of innovative and interactive approach of education, innovative undertaking by the dedicated teachers.

This occasion of Silver Jubilee celebration offers us to our gratitude to one and all associated with the growth of this institution. May the guardian Goddess adorning the entrance of the college bless it ever on its golden path!

Mrs. Priyadarshni
Associate Prof. Deptt. English G.C Rewalsar



A TRIP DOWN THE MEMORY LANE

While I have had my share of downs in life so far, I always remember the ups, especially the firsts of them. It brings an overwhelming feeling of joy every time I remember them and because the firsts are so special. G.C. Karsog was the first college from where my teaching journey started. For this reason G.C. Karsog has left an everlasting impression in my heart which shall persist forever. It is obviously a matter of great pride for me that G.C. Karsog is completing 25 years of its sterling service to the cause of education. A flood of memories comes up as I settle down to write this. I thank almighty that my luckfavoured and U.G.C. declared the result of UGC NET just two days before last date of submission of application forms for the post of Assistant Professor. I applied for the post at eleventh hour. On being commissioned I got my first posting at G.C. Karsog. Initially, I was hesitant to join here but on the insistence of my mentor, my guide, Dr. Janesh Kapoor, I joined this prestigious college.

My experience of travelling to Karsog is an unforgettable experience. That day I was accompanied by my father. I can recall the first glimpse of Karsog in the fall of 2006 when bus stopped at Churag. I saw a valley that was shining like a lush green meadow with full of crops and this scene often comes to my inward eye as 'daffodils' came to Wordsworth. I was mesmerized by the scenic charm of the Karsog valley and its pristine nature. It felt like going to mother as someone has rightly opined in his poetic words that "one who goes to hills goes to his mother caring, nourishing and bounteous mother."

Sh. P. C. Thakur was my first Principal and he was such a jolly good fellow. Under his guidance I began my teaching journey at this prestigious institution. I still remember the first day of my class at G.C. Karsog. Theatre style classrooms and keen eyes of the students on me. I was bit nervous but then it was like dream come true for me. To be Doctor of Philosophy in English and to be an English teacher had been my dream since high school days. And I mention that it has been 14 years now and I never came across such sincere students. Some are still in touch with me and I really feel proud to know their success stories, some are into business, some into teaching, some lawyers, and many more. The students hailed from humble background and were sincere and hardworking. Here in G.C. Karsog, I did something that I had always longed for. The time I spent here in G.C. Karsog was a period of great professional satisfaction as a teacher. Being the youngest staff member I was pampered by everyone in the college. I found friends Prof. Krishna and Prof. Ruchi Narang. With them I explored the town and some religious and historical places of District Mandi like Kamru Naag Temple, Mahanaag Temple and many others. Dr. Shakti Mahajan was my head of department. She was a very loving person and helped me a lot in taking my first step of my journey as a teacher. The teaching staffs were small in number but it was like family. It was the time when we used to celebrate birthdays of the staff members in the college, in today's time we prefer to wish our colleagues on facebook instead. Mostly on every Saturday there used to be party and our permanent caterer Sh. Matidharji used to make the best of Mandi Dham on such occasions. I still remember his Kadu Ki Sabzi, my mouth waters every time I think of it.

My teaching journey of 14 years that started from G.C. Karsog has always been a fascinating one mostly because I never intended to be a teacher in the first place. I have always liked the idea of helping my students and explaining problems they might have had with English as the language beyond the classroom walls and incorporating students' reality in their teaching and other soft skills. Above all I have also liked the idea to learn by teaching as they say "By learning you will teach; by teaching you will learn." Much remains unsaid but I have spent a memorable time in being part of G.C. Karsog. As long as I live my memories of G.C. Karsog shall also remain alive. At last but not least I heartily congratulate the Principal, staff members of G.C. Karsog on the eve of Silver Jubilee of the college. I hope and pray that this institution should scale new heights.

Dr. Shivani Sharma
Associate Professor
Department of English
Government College Solan



My Journey

"A good teacher is like a candle it consumes itself to light the way for others"

My time in the college has enriched my life in many ways. It has provided me with the necessary tools to enhance my skills, taught me valuable knowledge about this diverse world and people; and also many concepts in general which eventually will enable me to hopefully become more successful in life.

My journey has also taught me to think critically, analytically and logically when students ask questions out of nowhere, handle pressure in different situations and odd circumstances. All the aspects have made me a rolling stone. My experience so far has given me a chance to sharpen my skills in my field of choice.

Being here in Karsog, I have meliorated my knowledge of history, religion and methodology. I have had the privilege of visiting historical places like Mamlshwar Mahadev - a place related to the Pandavas and many more places I had no information before and my short treks to nearby places like Shikari Devi, Mahu Naag, etc. have helped me to learn many interesting things about the culture of denizens. People of Karsog are very modest, down-to-earth, self-effacing and hospitable. The stay in Karsog has been gratifying and quite enriching. My trips with my colleagues and students were also memorable, entertaining and educational and all these experiences are truly priceless and unforgettable that I would not trade for anything.

In around three years span spent here, I have also been assigned some important tasks of national importance such as Polling Officer and Nodal Officer to Election Expenditure Monitoring Committee which has nurtured my understanding of Indian Democracy and Polity and has enriched my knowledge as to how the actual government machinery works.

I have always believed the people you work with are what make your job worthwhile, engrossing and amusing. I have wonderful memories in this college with quite talented and hardworking colleagues who are highly supportive, unified and who deepen you as a person, always backing me up in my highs and lows and keep motivating and inspiring me. In my short journey as a college professor, I have felt growth in myself as a person and for sure as a professional.

Indeed, I don't have enough words to express my gratitude to all the people I have worked with. I would like to keep working harder and harder to polish the raw talent of students and help them in becoming good human beings, a responsible citizen and cherishing all their dreams for better future.

Sh. Puneet Thakur
Assistant Professor
Department of Commerce



The Show Must Go On...

2019 is a pivotal year to one and all of us here at Government College Karsog. It is an important milestone, a year when our institution completes twenty-five glorious years of excellence and service in the field of education. It feels great to be part of the Silver Jubilee Celebration. A flood of memories surface in my mind as I sit to scribble memoirs about the college. Let me take you back to 2009 when I joined this prestigious institution. I remember the first day when I entered the college. Room No. 18—the room where I took my first class. I was introduced like a celebrity to the students mentioning my association with FM Shimla, All India Radio. A great excitement could be seen on every refreshing face as they listened to me with rapt attention. It has been an eventful journey for me and I have enjoyed every bit of my time in the college. Besides teaching-learning, I have tried my level best to perform the administrative assignments entrusted on me. Working with young vibrant actors every year, the Dramatic Club has been instrumental in shaping me as a person and helped me in reaching out to the students directly. Representing the college in Himachal Pradesh University Youth Festival, Group-IV has provided incredible memories that will last long. It has kept intact the creative urge in me. I got the opportunity to be Programme Officer of National Service Scheme unit of the college that made me learn to connect to the people and work with selfless attitude. The memories of camps are etched in the mind—who can forget the community work, campus beautification, cultural nights, campfires!

I really feel fortunate enough to have worked with wonderful Principals. It has been a great learning experience. The staff members I have worked with have been quite co-operative, enthusiastic and full of life. I have been blessed with the finest colleagues who turned out to be friends. The life-long association with staff members has made the stay here worth remembering. How can I forget the sumptuous lunch shared by all in the afternoon! Long-drives, evening walks with friends and the most interesting part has been the dinners where we would gather and try new dishes. It had definitely added to the culinary tastes. It has been a unique experience!

Being the member of NAAAC SSR preparation committee twice, I am glad to have contributed my bit to the institution. Organising the National Conference—"Rethinking the Himalayas: Its Scope and Protection" in our college recently has been a great learning experience altogether. Ten years is a quite long period. I have seen the institution grow from pillar to post. The students have been excelling in academics, cultural and sports activities. The dedicated staff has been working assiduously to take it far. We are in the pursuit of perfection.

People ask me if I did not get bored staying in the same place for ten years. Certainly no. The verdant valley Karsog has so much to offer. It is the blessed land of Mamlshwar Mahadev and Goddess Kamaksha. Indeed, it is a great experience and a special occasion that I will not forget for a long time. The show must go on...

Sh. Kulbhushan Sharma
Assistant Professor
Department of English
Government College, Karsog (HP)
e-mail: kaybee24.rj@gmail.com



Karsog College – Nature and Reminiscence

Nestled in the lap of nature and one of the most serene, beautiful and fertile valleys of Himachal Pradesh, "Karsog" is truly a place one must visit. The valley and its people have blessings of the revered Mamlshwar Mahadev and Kamaksha Mata. I venerate this place for being a Botanist, as it brings in me an inherent blissful feeling when I discuss nature sitting in the lap of nature. So I have the same feeling like the saying goes 'you need not to work a single day, when you enjoy what you do.'

It is a great occasion and also a joyous and momentous event for the Government College Karsog, for it has successfully completed its 25 years journey since its establishment in 1994. Although I am a new entrant in the college family, yet I feel privileged that I got the chance to serve here. Here, I have never felt, home-away feeling due to congenial and supportive nature of the colleagues, staff members and the local community. The exceptional team of young and energetic colleagues has made me more productive and focused here. 'Happy employee is a productive employee', is what makes sense here being in the ambience of positive and joyful people.

In this short juncture what I have observed that the students here are hard working and carry positive attitude towards life and society. Every day when I see the radiant faces of the students entering the college, I feel heavy responsibility on my behalf. And while keeping that responsibility on my shoulders, I try to make the students of this college responsible citizen of tomorrow by imparting whatever knowledge I have.

It wouldn't be wrong if I say that college has become an integral part of my life. It is with great sense of pride and gratitude that I express my undiminished love towards this college and congratulate on this special occasion.

Dr. Pankaj Sharma
A.P Botany
GC Karsog



Govt. College Karsog - My Karma Bhoomi

Let me begin by saying thanks to the Almighty who gave me a chance to witness the land of Pandavas namely Karsog. In the face of frustration, you paved me a way to reach a destination I had always dreamt of. Karsog is a fascinating place situated in the lap of nature which attracts everyone to have a glimpse of it. It lies in the Pir Panjal range of the Himalayas having its border with Shimla and Kullu districts respectively.

Working as an Assistant Professor in Govt. College Karsog is a wonderful experience for me. At the very first day, I observe that it is one of best constructed buildings of Himachal Pradesh. Honestly speaking, I saw such beautiful buildings in films/movies, TV serials etc. On account of its enchanting sight, many actors and theatrical artists visit the site to have a glimpse of the building and play their part in the corridor of the college. Recently, I witnessed a few Punjabi artists taking their photo shoot in the vicinity of the college.

Academically, it made a grand mark by producing many eminent personalities and surpassing other adjoining colleges of the state. It has become the thing of the past when it was not counted among best colleges of Himachal Pradesh but now-a-days it is the well established college of District Mandi. The college unfurled the flag of triumph by having had numerous achievements in Dramatic Club, Sports, NCC, NSS and R&R.

Moreover, I have never been the student of this college but I feel honored to be the part of such institution which is in its zenith. This is the college where eminent personalities like Dr. B.C. Chauhan devoted his time for students shaping the careers of many students of this area. Above all, this is the place where mind is nurtured by the grace of Mamlshwar Mahadev, where Ma Kaamksha holds her hand as benediction on us, and where Mool Mahunnaag keeps watchful eyes over us. So this is the place where everyone wishes to stay in a state of gay.

Last but not least, the place where environment is conducive for studies and health, where teaching staffs is cordial, where students are sincere and where the air is replete with religious fervor! Why do we not celebrate the moment with cups of coffee together? Let us throng together to accomplish our work honestly in order to accelerate the momentum of progress where our predecessors had left for us. So let us begin this hard work together to transform our area into developed vicinity so that we may prove ourselves to be proficient to hold the educational legacy of our harbingers. Let us be the ones whose names may not be left on the sands of time. If the coming generation ever tell my story, let them say... I worked with Professor Kulbhushan Sharma and Dr. Vinod Sharma, men of principles. Let them say... I lived and enjoyed the moment when the college celebrated its 'Silver Jubilee Function' under the great leadership of Dr. Deepa Sharma, the present principal of the college.

Dr. L. D. Thakur
Assistant Professor
Department of English, GC Karsog



With Best Compliments From

GUPTA BOOK CENTRE

Deals in

Books, Magazines, School Bags, Sports Goods, School & Office Stationary, Computer Typing & Stationary, Photostat, Lamination, Fax Service, Courier Service & Spiral Binding

Main Bazar, (Near Excise & Taxation Office)
District Mandi (HP)

Rakesh Gupta Mob. : 9817112243
Tele Fax: 01907-222739(s)
01907-222043(R)



With Best Compliments From *VVFF*

MAMLESHWAR BOOK STORE

Deals in

All types of Stationary, School, College & MA Books,
School Bags, Photostat & Lamination, etc.

Near Govt. College Karsog, District Mandi (HP)

Sushant Sharma

Contact No. 9857598792
01907-221268



With Best Compliments From

H K TRADERS

Chetan Kumar
9816361974

Deals in

Hardware, Paints, Sanitary Goods, Plastic Pipes &
GI Fittings, Water Tanks, Electrical Materials etc

Near Govt. College Karsog, District Mandi (HP)

With Best Compliments From

Contact No.
01907-222548

TEJAS

A Family Hotel & Restaurant

(Approved by Department of Tourism and Civil Aviation, HP)

Lower Karsog Bazar District Mandi, Himachal Pradesh

With Best Compliments From

Munish Book Centre

*All kinds of Books, MBD, Notebooks & Sports Items,
School Bags, Photostat, Lamination*

**Near Government College Karsog
District Mandi, Himachal Pradesh**

Contact No. 98826-45143
96259-43143



With Best Compliments From

Contact No.
9418157450

VIVEK SWEETS SHOP

*Near Government College Karsog
District Mandi, Himachal Pradesh*

With Best Compliments From

EMBLEM EDUCATION

(Authorised Study Centre of HP Govt.)

Limited Seats Mobile No. 94188-15006, 98829-00505

- Aadhar Card
- Bonafide Himachali
- Employment Reg. Card
- Income Certificate (2 Lakhs)
- No Employment Certificate
- 4 Passport Size Photo
- Age 16-35 Years Old
- Min. Qualification: 10/+2/Graduation



Authorised Training Centre

Near Govt. College Karsog, Village Mammel,
Tehsil Karsog, District Mandi (HP)-175011

Remembrance

Those we love don't go away,
They walk beside us
every day,
Unseen, unheard but always near,
Still loved, still missed



Dr. Satish Sharma



Mrs. Nidhi Kapoor

*Those we love and lose
Are always connected by
Heartstrings into infinity*

A Glimpse of Important Celebrations



Government College Ka
District Mandi (HP)-175011
उन्नयन
CSCA Cultural F

वार्षिक पारितोषक वितरण समारोह

